ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- हिन्दी

दिनांक—03/09/2020   कृतिका(रीढ़ की हड्डी)

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

रीढ़ की हड्डी

--जगदीश चन्द्र माथुर

(सन् 1917-1978)

(शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गम्भीर हो जाते हैं।)

गो.प्रसाद : हाँ,हाँ ।वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी चीजों में से एक है।

रामस्वरूप : (शंकर से) चाय और लीजिए।

शंकर : धन्यवाद पी चुका

रामस्वरूप : (गोपाल प्रसाद से) आप?

गो.प्रसाद : बस साहब अब तो खत्म हो कीजिए।

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया हो नहीं। चाय के साथ 'टोस्ट' नहीं थे। क्या बताएँ , वह मक्खन..

गो.प्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं। और फिर टोस्ट-वोस्ट मैं खाता भी

रामस्वरूप : हँ...हँ...(मेज को एक तरफ़ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ़ मुँह कर जरा जोर से) अरे, जरा पान भिजवा देना....! सिगरेट मँगवाऊँ ?

गो. प्रसाद : जी नहीं!

(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपाल प्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर आँखें छिपाकर उसे ताक रहे हैं।)

रामस्वरूप : ...हँ....हँ... यही, हँ..हँ, आपकी लड़की है। लाओ बेटी पान मुझे दो। (उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है। और नाक पर रखा हुआ सोने की रिम काला चश्मा दीखता है। बाप-बेटे चौंक उठते हैं।)

(गोपाल प्रसाद और शंकर-एक साथ) चश्मा!

रामस्वरूप : (जरा सकपकाकर) जी, वह तो...वह...पिछले महीने में इसकी आँखें दुखनी आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

क्रमशः

छात्र कार्य-दी गई पाठ्य सामग्री का शुद्ध-शुद्ध वाचन करें ।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"